केवल इंसान गलत नहीं होते, कभी कभी वक्त भी गलत हो सकता है।
– अज्ञात

कीमतों में बेतहाशा बढ़ोतरी

लॉकडाउन का कठिन दौर झेलने के बाद मालवाहक ट्रकों का चलना शुरू ही हुआ था कि यह नई विपत्ति ट्रांसपोर्टरों के सिर आ पड़ी है। भाड़ा बढ़ाने की एक सीमा होती है। अभी यह जितना बढ़ा है, उससे न सिर्फ आवश्यक वस्तुओं के दाम बढ़े हैं, बल्कि ट्रक ऑपरेटरों की बेचैनी भी बढ़ी है।

मनोज शाह।

पेट्रोल और डीजल की कीमतों में बेतहाशा बढ़ोतरी के खिलाफ लोग सड़कों पर नहीं उमड़ रहे तो इसकी एक बड़ी वजह कोरोना और लॉकडाउन के चलते उनका घरों में कैद रहना है। इसका यह मतलब हरगिज नहीं लगाया जाना चाहिए कि इस बढ़ोतरी का लोगों पर कोई असर नहीं हो रहा है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतें पाताल तक लुढ़क जाने के बावजूद भारत की ऑयल मार्केटिंग कंपनियों ने पेट्रोल–डीजल सस्ता तो नहीं किया, हां 83 दिन तक उन्होंने इनके दाम एक ही जगह स्थिर जरूर रखे।

इसी दौरान 14 मार्च को केंद्र सरकार ने पेट्रोल और डीजल पर एक्साइज ड्यूटी 3 रुपये प्रति लीटर बढ़ा दी और फिर 5 मई को दोबारा पेट्रोल पर 10 रुपये और डीजल पर 13 रुपये प्रति लीटर एक्साइज ड्यूटी बढ़ाई गई। तेल कंपनियों ने टैक्स इतना ज्यादा बढ़ जाने के बावजूद कीमतें नहीं बढ़ाईं। लेकिन अप्रैल में नेगेटिव जोन में पहुंचने के बाद जब अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल कीमतें धीरे–धीरे कुछ ऊपर आईं तो भारतीय तेल कंपनियों ने कीमतों को लागत के मुताबिक एडजस्ट करने की दैनिक प्रक्रिया शुरू कर दी। इसके बाद 7 जून से कुल 18 दिनों में डीजल कीमतें साढ़े दस रुपये और पेट्रोल कीमतें साढ़े आठ रुपये प्रति लीटर से ज्यादा बढ़ चुकी हैं। इसके पीछे मुख्य भूमिका टैक्स में हुई भारी बढ़ोतरी की है, जिसे मौजूदा हालात में समझा भी जा सकता है।

सरकार की आय के सारे रास्ते करीब–करीब बंद हैं, लिहाजा आमदनी जुटाने के लिए उसके पास ज्यादा विकल्प नहीं हैं।

दूसरी तरफ यह बात भी सही है कि पेट्रोल–डीजल की कीमतों में इजाफे का यह फैसला सरकार का नहीं बल्कि संबंधित कंपनियों का है। इसके बावजूद ईंधन की कीमतों में इस बेतहाशा बढ़ोतरी के दुष्प्रभावों की अनदेखी नहीं की जा सकती। लॉकडाउन का कठिन दौर झेलने के बाद मालवाहक ट्रकों का चलना शुरू ही हुआ था कि यह नई विपत्ति ट्रांसपोर्टरों के सिर आ पड़ी है। भाड़ा बढ़ाने की एक सीमा होती है। अभी यह जितना बढ़ा है, उससे न सिर्फ आवश्यक वस्तुओं के दाम बढ़े हैं, बल्कि ट्रक ऑपरेटरों की बेचैनी भी बढ़ी है। उनके संगठनों की तरफ से सरकार को गाड़ी की चाबियां सौंपने जैसे सांकेतिक कदमों की घोषणा होने लगी है। लेकिन सबसे खतरनाक है खेती पर डीजल महंगा होने का प्रभाव। खेतों की जुताई, बोआई और रोपाई का काम सिर पर है, लेकिन ट्रैक्टरों और पंपिंग सेटों का खर्चा आसमान पर पहुंच रहा है।

इस साल अर्थव्यवस्था की सारी उम्मीदें जिस एक सेक्टर पर टिकी हैं, वह कृषि क्षेत्र ही है। ऐसे में महंगे डीजल ने अगर किसानों की कमर तोड़ी तो इस आपदा की चपेट में गांव ही नहीं, शहर भी आएंगे। जाहिर है, तेल कीमतों में बढ़ोतरी को आवश्यक बताने वाली सारी दलीलों को सुनने और स्वीकार करने के बावजूद कीमतों पर काबू पाने की जरूरत कम नहीं हो रही। सरकार को समय रहते कोई ऐसी राह निकालनी चाहिए जिससे पेट्रोल और डीजल की महंगाई बर्दाश्त से बाहर न हो।

तनाव

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा। तनाव का सबसे बेहतर इलाज योग विज्ञान में हैं, वहीं लोगों में सुंदर दिखने की बढ़ती ललक भी योग और आयुर्वेद विज्ञान को नया आयाम देगी। यह पूरे भारत के लिए गर्व का विषय है। आम आदमी के जिंदगी में तनाव तेजी से बढ़ रहा है। पूरी जिंदगी असंमित हो गई है, जिसकी वजह से परिवार में तनाव और झगड़े होते हैं। लोगों के पास आज पैसा है लेकिन शांति नहीं है, जिसकी वजह से परिवार में संतुलन गायब है। लोग खुद से संतुष्ट नहीं है। इस स्थिति से निकालने के लिए योग सबसे बेहतर उपाय हो सकता है। इसलिए भाग दौड़ की जिदंगी को अगर संयमित और संतुलित करना है तो मन को स्थिर रखना होगा। जब तक हमें मानसिक शांति नहीं मिलेगी तब तक हम जीवन के विकारों से मुक्त नहीं हो सकते हैं। उस स्थिति में योग ही सबसे सरल और सुविधा युक्त माध्यम हमारे पास उपलब्ध है।

संपादकीय

गंवा दिया मौका

चीन की दुर्नीतियों के समक्ष कांग्रेस का एक ही स्टैंड होना चाहिए था कि इस समय हम सरकार के साथ हैं और जो भी सवाल हैं उन्हें बाद में उठाया जाएगा। कांग्रेस इस नीति पर चलती तो वह देश की मुख्यधारा में होती। लेकिन अपने रवैये से वह सेना के जवानों और सेवानिवृत्त सैनिकों को भी अपना विरोधी बना चुकी है। जब आप कहते हैं कि मोदी ने चीन को भूमि समर्पित कर दिया, चीन ने हमारे इलाकों पर कब्जा कर लिया तो यह सेना के खिलाफ जाता है, क्योंकि नियंत्रण रेखा पर अपने क्षेत्र की रक्षा करने तथा चीन को न घुसने देने की जिम्मेदारी उसी की है। अपनी पहले की गलतियों में सुधार कर जन सहानुभूति पाने का बहुत बड़ा अवसर कांग्रेस ने गंवा दिया है। इसमें उसका राजनीतिक भविष्य क्या होगा, इसके आकलन के लिए किसी गहरे विश्लेषण की आवश्यकता नहीं है। कांग्रेस के बारे में यह निस्संकोच कहा जा सकता है कि वर्तमान पार्टी नेतृत्व अपनी गलतियों के कारण आए प्रतिकूल परिणामों से कुछ नहीं सीखता है। 1999 में कारगिल युद्ध के दौरान हमारे जवान अपने प्राणों की आहुति दे रहे थे, देश में पाकिस्तान के खिलाफ एकता थी, लेकिन कांग्रेस वाजपेयी सरकार पर हमले कर रही थी। परिणाम यह हुआ कि आम चुनाव में सोनिया गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस को 114 सीटों पर सिमटना पड़ा जो उस समय तक की उसकी न्यूनतम सांसद संख्या थी। 2016 में सर्जिकल स्ट्राइक पर पार्टी ने सरकार को झूठा करार दिया और उसके बाद के चुनावों में उसे जनता ने नकार दिया। फरवरी 2019 में पाकिस्तान की सीमा पार कर आतंकवादी ठिकानों पर हुई बमबारी की साहसिक और देश को ऊर्जस्वित करने वाली घटना का कांग्रेस ने उपहास उड़ाया और जनता के बड़े वर्ग को अपना विरोधी बना लिया। कांग्रेस के किसी नेता ने 2019 में पार्टी के इतने बुरे प्रदर्शन की कल्पना नहीं की थी।

प्रधानमंत्री को चीन के संदर्भ में सोच–समझकर बयान देने तथा भड़काऊ वक्तव्यों से बचने की सलाह दी गई है, लेकिन कहीं भी चीन की असभ्यता और बर्बरता की तीखी निंदा नहीं है।

बयानों में गैरजिम्मेदारी

अवधेश कुमार।

कांग्रेस नेतृत्व भले इसे स्वीकार न करे, लेकिन चीन–भारत तनाव के बीच अपनी भूमिका के कारण उसने आम भारतीय को अपना विरोधी बना लिया है। चीन की धोखेबाजी, षड्यंत्र और बर्बरता से क्रुद्ध और उससे निपटने की मानसिकता में खड़े देश को समझने में कांग्रेस नेतृत्व फिर विफल रहा। राजनीतिक व्यवहार का सर्वमान्य मानक यही है कि अगर किसी देश से विवाद, तनाव और टकराव हो तो उस समय सभी पार्टियों को सारे मतभेद भुलाकर दुश्मन देश के विरुद्ध एकजुटता दिखानी चाहिए। यहां तो हमारे 20 जवानों की वीरगति का भावनात्मक उफान वाला पहलू भी जुड़ा है।

16 जून से लेकर अभी तक के राहुल गांधी के ट्वीट, उनके विडियो बयान, फिर सोनिया गांधी के विडियो बयान और उनका समर्थन करते नेताओं के ट्वीट, वक्तव्य तथा टीवी बहसों में दिए जा रहे तर्कों को नासमझी और गैर जिम्मेदारी के प्रदर्शन के अतिरिक्त कुछ नहीं कहा जा सकता। आप सारे बयानों को देख लीजिए, सबमें पूरे घटनाक्रम के लिए केवल केंद्र सरकार, विशेषकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को दोषी करार दिया जा रहा है। आपको किसी वक्तव्य में चीन के खिलाफ गुस्सा नहीं दिखेगा।

पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह से जो लिखित वक्तव्य दिलवाया गया, उसका स्वर भी चीन की जगह सरकार विरोधी ही है। इसमें बिना नाम लिए प्रधानमंत्री को चीन के संदर्भ में सोच–समझकर बयान देने तथा भड़काऊ वक्तव्यों से बचने की सलाह दी गई है, लेकिन कहीं भी चीन की असभ्यता और बर्बरता की तीखी निंदा नहीं है।

कांग्रेस का तर्क है कि हम विपक्ष हैं और सरकार से प्रश्न पूछना हमारा दायित्व है। विपक्ष के दायित्व से इनकार नहीं है, किंतु उसमें भी मर्यादा रेखा होती है। उसमें भी विवेक और बुद्धि कौशल का उपयोग करने का पहलू है। किसी परिपक्व लोकतंत्र में ऐसा नहीं होता कि कोई देश षड्यंत्र और सैन्य शक्ति की उद्दंडता से सीमा को लीलने की कोशिश करे और हम उसका विरोध करने की जगह अपनी ही सरकार को घेरने में ऊर्जा लगाएं। इससे सीमा पर डटी, प्राण न्यौछावर करने को तैयार सेना का मनोबल गिरता है, देश में एकता न होने का संदेश जाता है तथा देश के अंदर आम लोग आप से नाराज होते हैं। इस आधार पर विचार करें तो कांग्रेस नेतृत्व देश के साथ अपना भी राजनीतिक नुकसान कर रहा है।

कांग्रेस के अंदर ऐसे नेताओं की बड़ी संख्या है जो इसे गलत और आत्मघाती मानते हैं, पर सोनिया और राहुल के विरोध में बात रखने का साहस करना पार्टी के अंदर अपनी राजनीतिक पारी का अंत करने जैसा है। सर्वदलीय सम्मेलन में सोनिया गांधी ने सरकार पर प्रश्नों की बौछार करके अपने को विपक्ष में भी अकेला बना लिया। दोनों कम्यूनिस्ट पार्टियों ने भी इस तरह के प्रश्न नहीं खड़े किए। शरद पवार और ममता बनर्जी सहित ज्यादातर विपक्षी नेताओं को कहना पड़ा कि यह समय चीन के विरुद्ध एकता का है, राजनीति करने का नहीं। यह कांग्रेस के लिए सीधा संकेत था कि उसने देश की आम भावना के परे गलत पटरी पर रेल चला दी है। आज की स्थिति यह है कि चीन से निपटने के मसले पर लगभग पूरा देश सरकार के साथ है और कांग्रेस अलग–थलग पड़ी है।

अष्टयोग-5099

4	7		6		2	1
1	31	2	38		28	
	1	6		7	2	
6	36		33		28	5
3		7		2	1	
	32		31	4	33	2
2	3		4		6	7

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 5098 का हल

4	3	7	1	6	2	5
3	32	6	36	2	30	1
6	1	2	5	7	4	3
5	33	1	29	4	30	6
7	6	5	4	1	3	2
2	30	4	32	3	31	7
1	2	3	7	5	6	4

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

पैरों पर स्वयं कुल्हाड़ी मारना

मोहन। जम्मू–कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाए जाने के बाद पाकिस्तान ने चीन के साथ मिलकर भारत के विरुद्ध अभियान चलाया और कांग्रेस पार्टी उनका विरोध करने की जगह सरकार पर हमला करती रही। पाकिस्तान ने संयुक्त राष्ट्र महासचिव को जो पत्र लिखा उसमें राहुल गांधी के बयान उद्धृत किए। ऐसे अनेक उदाहरण हैं जिनसे कांग्रेस अपने पैरों पर स्वयं कुल्हाड़ी मारने वाली पार्टी दिखाई देगी। आज सरकार और बीजेपी के लिए उसे चीन समर्थक साबित करने में कोई समस्या नहीं है। अगर कांग्रेस ने इस तरह का रवैया नहीं अपनाया होता तो 2008 में चीनी कम्यूनिस्ट पार्टी के साथ कांग्रेस के लिखित समझौते से लेकर राजीव गांधी फाउंडेशन को चीन से मिले चंदे तक के मामले नहीं उछलते, जिनपर रक्षात्मक होने के अलावा कोई चारा कांग्रेस के पास नहीं है।